1.बुनीयाद डालना

इस पुस्तक को पढने के लिए पूर्वशर्त :

यह पाठय क्रम हर किसी के लिए वही है। इस पाठय क्रम मे आप सीखोगे कि आत्मिक क्षेत्र में कैसे प्रवेश किया जाता हँ। वहॉ आप को पवित्र आत्मा और दुष्ट आत्मा, दोनो मिलेगीं। विना किसी बचाव कवच के आप आसानी से फंस जाऐंगे और दुश्मन द्वारा नष्ट हो जाओगे। इसलिए परमेश्वर ने कुछ बहत हि ज़रुरी और साफ मार्ग दर्शन बताया है जो आप को इस आत्मिक दुनिया में सुरक्षित तौर से ले जाऐगा। वे यहॉ संक्षिप्त मे दीए गए है।

- आप का मसीह में दुबारा जन्म लेना जरुरी हँ, जिस से आप अपने स्वार्थ के लिए जीवन व्यत्तीत करना छोड़ कर, कलवरी के खून से जो यीशु कि ताकत मिलती है, उसे अपना वा है।
- आप यकीन करते है कि बाईबल परमेश्वर का स्थिर वचन है।
- आप को मूल कार्यकाटी जातकारी गोनी चाहिए, कम से कम नए नियम कि और बाकी कि बाईबल पर भी कुछ कार्य कर रहे होंगे।
- आप उस के आधीन हैं जो परमेश्वर ने आप को वचन से दिखाया है।
- आप का किसी स्थानीय वीर्जाछर से संबधं रखना जंरुरी हे और यह भी कि आप वहॉ के आत्मिक अधीक्षक के आधीन रहें।

एक मसीही जो मसीहत में नया और जवान है, इन जरुरता को पूरा कर सकवा है। नऐ नियम को पढने के लिन कवल डेढ दिन लगते हैं और बाकी जरुरतो को बातचीत द्वारा पूरा किया जा सकता है। यह अच्छा होगा कि जो लोग मसीह में नऐ आए है वे शूरु के दिनों से हि परमेश्वर के साथ बन्छुत्व को शुरु कर नें। वे उस शांती और आराम को पाऐंगे जिस के लिए वे उत्सुक्ता से लालासा करते थे ।

आत्मिक कवच को स्थापित :

करना मैं समझवा हँ कि यह बहुत ज़रुरी है कि हर कोई अपनी ज़िदगीयों में उन लोगों को स्थापीत करे जो अधिकारी हों। बईबल कहती है कि हमें एक दूसरे के अधीन रहना है (ईफीसियों ५:२१)।

इब्रनियों १३:१७ कहवा है" अपन अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्यों कि वे इनके समान तुम्हार प्राणों के लिए जागते रहते है जिन्हें नेखा देना पडगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठण्डी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा मे तुम्हं कुछ लाभ नहीं"।

इस का क्या उद्देशय हे कि हम परमेश्वर में अपने आप को किसी के अधीत है"? परन्त सम्मति देनेवालो की बहुतायत के कारण बचाव होतां हैं (नीतिवचन ११:१४)" परमेश्वर के आत्मिक अधिकारी को रसलिए किया कि म इस धत्री तले स्वंय को धोखा न दे सकें और शैवान कि धोखा धड़ी सेभी बचे रहें।

यह उस वक्त बहत ज़रुरी हो जाता है जब हम आत्मिक क्षत्र मे चलना शूरु करते हैं कलपना करने लगन हैं और परमेश्वर कि अन्दरुणी आवाज़ को सुनते हैं। आत्मिक अधिकारी का क़ार्य है कि वह लिरक्ते में जो गलती होती है उसे पकड़ने में सहायता करता है और ज़रुरी हो तो वह कुछ देर रूक कर आगे पढते कि चेतावनी देता है। नए शिक्षाती ...... परमेश्वर कि आवज़ को सुनना शुरू किया है, उन्हें आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देता है और आखासन देता है कि यह सच में परमेश्वर कि ही आवाज है।

इस रिश्ते का कन्द्र अधिकार नही दोस्ती है। वह जो किसी कि जिन्दगी में प्रभावकाटी तारसे आत्मि के चखाह बन सकता है, वह:

- **एक धना मित्र है** - वह जो अपनी भेड़ों को पहचानग है और भेड़े उस कि आवाज पहचानती हैं।
- वह गे है जो पुरी **बाईबल को मज़बूती से जानता है**।

- **इद्रीय ज्ञान है** - परमेश्वर कि आत्मिक आवाज अपने ह्यदय में सुन सकता है ।
- वह अपने आप को अपनी भेड़ो के आधीन करने के तैयार रहता है और अपनो समय, औप्ताकत, **को इसतेमाल करता है ओर अपनी भेड़ कि खातिर अपना जीवन दान देने को भी तैयार रहता है** ।
- वह खुद **अधीन रहात है** ।

दुसरी तरफ भेड़ों अपनो चखाह कि आवाज का आदर करती हैं । वह अपने चखा के पीछे जहा । भी वह ले जाए जाने को तैयार रहता है और अपने आप को उस के अधीन कर देता है जो उस के ऊपर है (इब्रानियों १३:१७) परमेश्वर न जो रक्षक वय उस क ऊपर नियुक्त किया है । महत्वपूर्ण फैसले का मतलब वह है जो उस के जीवन कि दिशा में एक बडा बदलाव लाण्गा, या उस गिन प्रभु कि सेवा में उस कि नौकरी में या किसी जगाह बड़ी पूँती लगाना जिस के कारण वह कई वर्षो तक वह वचनबद्ध रहेगा । (इस तरहा, वह कोई, गलती नही कर पाऐगा जिस के कारण उसे अपने जीवन के कई साल गरीबी में काटने पडेंगे) परमेश्वर कि आवाज को समझने के लिए भेड़ों ने भी उस के विचारों को लिखना और अगाही को चरवाहग को बताना शरू कर दिया है बाकी वह सुरक्ष कवच तले उन्हें और विश्वास के साथ समझ सकें ।

हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारीयो के अधीन रहे क्यों कि कोई अधिकार ऐसा नही जो परमेश्वर कि और से न हो, और जो अधिकार है, व परमेश्वर के ठहराया हुए हैं । रोमियो १३.१). राजा का मन नालियों के जल के समान चहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ करता है उस के लिए जो उस के ऊपर है (। तिमुथि युस २छ१-४) वह विश्वास करता है कि परमेश्वर अपनी परीपूर्णतां को मनुष्य कि अपूर्णता से पूरा करता है ।

यदी भेड़े अपने चरवाह से कुछ जानना चाहती है तो वह उत्रे पुष्टीकरण या अनुकूल बनाने के लिए परमेश्वर कि सहायता लेता है । हव अपनी, भेड़ो के साथ वह बात को बॉटता है जो परमेश्वर मे उस के मन से बातचीत की / अगर कुछ

भिबुता है तो थेडे दूबारा परमेश्वर के पास जाती हैं । यह जानने के लिए कि इस भिन्नता को कैसे ठीक किया जाए । वह फिर अपने चखाह कों बताता है कि इस भिन्नता को दूर करने के लिए परमेश्वर ने उस से क्या कहा/अगर परेशानी का कुछ हल वही मिल पाता है जो भेड़ को चरवाह कि बात मान लेनी पदती है बशर्त है कि वह पवित्रशाश्त्र का खण्डन न करे सिद्धांतो.

अधीकार के पे ज्यादा पूर्णता से पाठ 13 में बदाया गया है और "इस्टीट्पूट औफ बेसिक चूथ कौनकि कौनफ्लिक्ट "में जो कि बिल गोथर्ड द्धारा लिखी गई है ।

क्या कोई कवच नहीं मिल पा रहा ?

कई लोगों को आत्मिक कवच दूढँने में मुश्किल होती है । मैं आप को कुछ लाभ दायक संकेत बताता हैं ।

पहले यह जान लीजिए कि ऐसा कोई निर्दोष व्यक्ति नही है जिस के अधीन आप अपने आप को सौंप सकते हैं । इस कारण आपन किसी अपूर्ण व्यक्तिको सोंप सकते है हय विश्वास सकते है कि परमेश्वर अपना परिपूर्णता का कार्य किसी अपूर्ण व्यक्ति के माध्यम से भि कर सकता है । यह भी देखीए कि परमेश्वर ने आप के चारों ओर पहले से हि लोगों के रखा हुआ है । यह ही सकता है कि आप अपना आत्मिक कवच इन्ही में से किसी को पाएं । दोस्त, पती, घरेलू प्रर्थाना धुण्ड के प्रतिनिधी, गुरूजन, उवयाजक, और पादरी आदी सब्र चुनने यागय उम्मीदवार हो सकते हैं ।

मैं कितनों के आधीत हो सकता हँ ?

दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाऐगी (श्कुरिन्थियों 13:1)

यहाँ यय सलाह दी जाती है कि हर व्यक्ति अपने आप को दूसरे दो या तीन लोगों के अधीन करे । जब किसी महत्वपूर्ण दीशाओ पर चलना पडता है तब जरूरी है कि तीनो की अनुमती होनी चाहिए । मैंने 1976 से अपने आप को तीन व्यक्तियों के अधीन सौंका है । पिछले तेराह वर्षो में इन्होंने मझे बडी गलतीयाँ करने से चेका है । यह अधीन करना सपन्द है ।

मैं किस के अधीन रहुँ ?

कुछ संम्बन्ध तो पहले से हि बने हुए है । जैसे कि माता-पिता, पति, मालिक, घरेलू प्रार्थना छुण्ड के प्रतिनिधी पादरी, गूरूजन आदी, सब का आप पर अधिकार और प्रभाव हे' एक पत्नी को अपने पती के अधीन होना चाहिया । पतीयों को पादरी के अधीन होना चाहिए । हो सकता है कि पत्नी यह चाहती हो कि ऐसा कोई और मिले जिसे के अधीन वह अपने पत्रचार को सौंप सके । अपने पती के साथ मिल कर सहमत हो जाना चाहिए कि वह औरत कौन है जिस के
साथ वह दोनों हि के लिए सुविधाजनक हौ ।

अकलमदी इस में होगी कि जिस के साथ हमें नज़दीकी आत्मिक रिश्ता बनाना है वह एक औरत हि हो आदमी नहीं यह विपरित चौन का न हो । विपरित चौन के होने से इस बात का बहत खतरा हो सकता है कि दोनो का शारिरिक संम्बन्ध बन जाए और यह विनाशक हो सकता है ।

क्या यह रखवाली करना न हआ ?

हॉ एंव न । जो रखवाली से संम्बंध रखने हैं, वे आत्मिक कवच और आत्मिक अधीकार कि वापसी लाते है ? यद एक साहासी प्रथन्न था परन्तु, कुछ किस्सों में यह प्रभाव जमाने में, न्यायपूर्णता में और एक नियंत्रण कि भावना में बदल जाता है । यीशु ने कहा है कि हम मूती पूजकों कि तराह दूसरों पर बल से शासन नहीं करते, परन्तु प्रेम के साथ एक दूसरे कि सेवा करते हैं । प्रेम में, प्रभावशाली, धमकीयों, यह दबाद बिलकुल निषेध है (1 पतरस 5:1-) । प्रेम प्रभावशाली, ताकतो के अमत्रित करता है । इसलिए मै फिर से कहता हँ कि इन रिश्तों का केंद्र दोस्ती है अधिकार नहीं ।

आवो यह कहना चाहुँगा कि हमें अपने आत्मिक चरवाहो को बदलने कि छुट है जैसे जैसे हम आगे बढते जाते और बढलते है वैसे वैसे पर अगर आप हर छः महीने में चरवाह बदलते है तो इसका मलतब है कि आप में हि जीवन मे कुछ समस्या है । परुतु, अगर हर पाँच साल में आप चरवाह बदलते हैं तो. यह इस बात को बताता है कि आप के जीवन में बदलाव आ रहा है जिस के कारण नए सलाहकार कि आवश्यकता है। यह ज़रूरी है कि जब आप एक चरवाह धोड़ कर दूसरे चखाव कि ओर जऐं, तो आप कर्याप्त सुरक्षा कवच के बिना न रहें।

प्रार्थना:

परमेश्वर, हमें विश्वास हे कि जैसा आप के पवित्र में बताया गया है, दाप अपना कार्य अधीकार के सिद्धात के साथ करीए, और अपनी परिपूर्णता को हमारी अपूर्णता से करें। परमेश्वर कि महीमा हो, आमीन।

परमेश्वर कि आवाज़ को सुनने के लिए, सरसरी तौर पर चार मुख्य चाभीयाँ.

परमेश्वर कि आवाज़ को सुनने के लिए जिन चार मुख्य चाभीयों ने मेरे लिए और कई हज़ारों लोगो के लिए द्धार खोल हैं, हम उन एंक सर,की तौक,से देखते, हुए इस प्ररम्भिक पाठ को समाप्त करते हैं। हम इन के बारे मे गहराई से, आगे के पाठा में धहराई से बहस करेगो। बे यह हैं।

जैसे कि हबक्कूक में दर्शादा गया है	संक्षेप में वर्यात
"मैं अपने पहरे पर खड़ा रहुँगा........"	**चाबी #1** परमेश्वर के सामने, अपने आप को शान्त करने के लिए एक शान्त जगाह को चुनिए।
" और ताकता रहुँगा......."	**चाभी # २** प्रार्थना करते समय कल्पना पर ध्यान दें।
" मुझ से बह क्या कहेगा......."	**चाभी # ३** परमेश्वर कि आवाज़ को स्वाभविक विचारों के ज़रिए आने दें।
" यहोंवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बाते लिख दे......."	**चाभी # 4** परमेश्वर के वचनों को अपने पत्रों में लिखीए।

हबक्कूक २:१-२

चरवाह/ आत्मिक सुरक्षा देने वाले के हस्ताक्षर के लिए

ऊपर बताए गए अनुसार, आत्मिक चखाह के कर्तव्य को समझते हुए, मै यह सोचता हँ की परमेश्वर ने मुझे चुना है कि मैं यह कर्तव्य....................कि जिढगी में, इस वक्त करू, और मैं कसम खाता हँ कि मै यह ज़िम्मेदरी पूरी इमानदारी के साथ निभाऊँगा।

यीशु मसीह कि देह मे, खुद आत्मिक मनुष्यो के अधीन हँ। मैं यह जानता हँ कि आधिकार का मतलब प्रभाव जमाना नहीं बरण सेवक नेतृता है, दाने अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन टयाग देना।

अगर मुझ से उस विषय पर परामर्श किया जाता है जिस कि मुझे जानकारी नही है, तो मै दूसरे आत्मिक नेतृत्व कि ओर सलाह दूगाँ, जो उस झेत्र में परीपूर्ण हो।

मेरे अधीन किसी भी व्यक्ति को वह नहीं करने दूँगा, जा पवित्रशास्त्र में विषेध है। अगर इन आदर्श को मैं नही रख परात हँ, तो उपर्युक्त मनुष्य मेरी आत्मिक निगराणी से मुत्क हो किसी और चखाह को खौज अस के अधीन हो सकता है।

दिनांक:..............................

नाम:.......................

कृपया इस फार्म कीं दो प्रतिलिपी बताऐं, तीकी दोवों दल जो इस रिश्ते में बन्द रहे है; हर एक क पास एक प्रतिलीपी हो। यह फार्म, चौथे हफते में, जब परमेश्वर से बधुत्व" कोर्स पढ़ाया जा रहा हो, तब प्रशिक्षक को बताया जाए, अगर विछार्थी इस कोर्स मे रहता चाहता। उपर्थुक्त पृष्ठ कि प्रतिलिपी ली जाए और एक प्रतिलीपी आत्मिक चखार को दी जाए।